ARINO SEEDS

IMPORTANT NOTICE – TERMS & CONDITIONS OF SALE AND USE: By opening and using these seeds, you agree to the following terms. If you do not accept, return the unopened package with proof of purchase for a full refund. This product is licensed for planting only in approved regions. The resulting crop may only be used for food, feed, or processing. **RISK OF NON-PERFORMANCE:** Seed performance may be affected by factors beyond ARINO SEEDS PVT LTD control (e.g., weather, pests, diseases, soil, planting practices). The buyer assumes all such risks. **LIMITATION OF WARRANTIES & LIABILITY:** ARINO SEEDS PVT LTD warrants only that the seed matches the label description within legal tolerances. No other warranties (express or implied) are given. ARINO SEEDS PVT LTD is not liable for incidental or consequential damages. Remedies are limited to seed replacement or refund, at ARINO SEEDS PVT LTD's discretion. Claims must be reported within 30 days of discovery or before harvest, whichever is earlier, and submitted directly to ARINO SEEDS PVT LTD. Terms may only be changed in writing by ARINO SEEDS PVT LTD's authorized representative.

PRODUCED BY: ARINO SEEDS PVT LTD.

Arino seeds Pvt.Ltd Survey No :456/3,OPP.Kishan Cattel Feed,Gundala Road, Gondal-360311,MO-88588 81981

WEBSITE – WWW.ARINOSEEDS.COM

CHICKPEA: PACKAGE OF AGRONOMIC PRACTICES

1.AGRO-CLIMATIC REQUIREMENTS AND SOIL PREPARATION

Climate:Winter crop (15–25°C ideal); frost during flowering damages yields.Moderate rainfall (60–90 cm/year); waterlogging harms growth. **Soil**:Well-drained loamy/silty clay loams (pH 6–8).**Preparation**: Deep ploughing followed by harrowing for aeration. Remove stubble to prevent soil-borne diseases.

2. SEED SOWING

Seed Rate:Desi varieties: 60–90 kg/ha.Kabuli varieties: 100–125 kg/ha. **Spacing**:30 cm between rows, 10 cm between plants. **Sowing Time**:Rainfed: October (second fortnight); Irrigated: November (first fortnight). **Method**:Line sowing with seed drill or local plough; avoid deep sowing (>8 cm).

3. NUTRIENT MANAGEMENT

Basal Application:Rainfed: 12.5 kg N + 25 kg P_2O_5 + 12.5 kg K_2O + 10 kg S/ha.Irrigated: 25 kg $ZnSO_4$/ha in zinc-deficient soils. **Biofertilizers**:Seed treatment with Rhizobium + Phosphobacteria (200 g/ha). **Micronutrients**: Boron (1–1.5 kg/ha) in deficient soils.

4. IRRIGATION

Water Requirement: 250–400 mm/season; light irrigations (50–60 mm each). **Critical Stages**:Pre-flowering (25–30 DAS) and pod development (45–50 DAS). **Methods**: Furrow or sprinkler irrigation to avoid waterlogging.

5. WEED MANAGEMENT

Pre-Emergence Herbicides: Pendimethalin (1 kg/ha) or oxyfluorfen (0.25 kg/ha). **Manual Weeding**: Once at 45 days after sowing (DAS). **Integrated Practices**: Intercropping with mustard/coriander.Mulching with crop residues.

6. INTEGRATED PEST MANAGEMENT (IPM)

Key Pests: Pod borer (*Helicoverpa armigera*), cutworm, aphids. **Strategies Cultural**:Deep ploughing, synchronous sowing, marigold trap crops.**Biological**: *HaNPV* (250 LE/ha), *Bt* sprays, conservation of natural enemies. **Chemical**:Spinosad (0.015%) or emamectin benzoate (0.002%) if pest thresholds exceed. Bengal gram faces threats from pests like pod borer (*Helicoverpa armigera*), cutworms, aphids, and bruchids. A holistic IPM approach combines monitoring, cultural, biological, and targeted chemical interventions to minimize yield losses while preserving ecosystem balance.

PEST MONITORING

Rapid Roving Surveys (RRS): Conducted in pest-prone areas to detect early infestations.

Agro-Ecosystem Analysis (AESA):Monitor 20 plants/field weekly for pests, natural enemies, soil health, and weather. Calculate **Pest:Defender (P:D) ratio** (2:1 threshold for action). Favorable ratios negate chemical use.

CULTURAL STRATEGIES

Field Preparation: Deep summer ploughing to expose soil-borne pests and destroy stubble.

Intercropping: Mustard, coriander, or sorghum as guard crops to attract natural enemies.

Resistant Varieties: Use wilt-resistant cultivars (e.g., JG 11, JG 130). **Crop Rotation**: With non-host crops (e.g., jowar, rice) to disrupt pest cycles. **Trap Crops**: Marigold borders or sunflower rows to divert pests.

BIOLOGICAL CONTROL

Natural Enemies: **Parasitoids**: *Telenomus* spp. (egg parasitoid), *Campoletis chlorideae* (larval parasitoid). **Predators**: Ladybird beetles (50 aphids/day), lacewings (400 aphids/lifecycle), spiders. **Biopesticides**: *HaNPV* (250 LE/ha) for pod borer. *Beauveria bassiana* (entomopathogenic fungus).

MECHANICAL & PHYSICAL METHODS

Light Traps: 1 trap/acre to monitor and mass-trap moths (operate 6 PM–10 PM). **Pheromone Traps**: 5 traps/ha for pod borer monitoring. **Bird Perches**: 20/ha to encourage avian predators.

CHEMICAL INTERVENTIONS

Seed Treatment: Imidacloprid (3 g/kg) or thiamethoxam (4 g/kg) for soil pests. **Targeted Sprays**: Spinosad (0.015%) or emamectin benzoate (0.002%) if P:D ratio exceeds 2:1. Neem oil (2–3%) or NSKE (5%) as botanicals. **Soil Treatments**: Chlorpyriphos 5D (25 kg/ha) for cutworms.

Key IPM Principles: Prioritize natural enemy conservation, adopt synchronous sowing, and avoid broad-spectrum pesticides to maintain ecological balance. Regular field monitoring and farmer training on AESA are critical for sustainable pest management.

7. HARVESTING AND POST-HARVEST MANAGEMENT

Harvesting: When 80% pods turn yellow; manual or mechanical threshing. **Drying**: Reduce moisture to 10–12% for storage. **Storage**: Use hermetic bags or treat with neem oil to prevent bruchid infestation.

Loss Mitigation: Avoid rain during harvest; ensure rodent-proof storage.

Important Note: Adjustments may be needed based on local soil tests or climatic conditions.

चना:कृषि पद्धतियों का पैकेज

1. कृषि-जलवायु आवश्यकताएँ और मिट्टी की तैयारी

जलवायु: शीतकालीन फसल (15-25°C आदर्श तापमान); फूल आने के समय पाला पड़ने से उपज को नुकसान होता है। मध्यम वर्षा (60-90 सेमी/वर्ष); जलभराव वृद्धि को नुकसान पहुंचाता है।

मिट्टी: अच्छी जल निकासी वाली दोमट/गाद युक्त चिकनी दोमट मिट्टी (पीएच 6-8)। तैयारी: गहरी जुताई के बाद हवा के संचार के लिए हैरो चलाना। मिट्टी जनित रोगों से बचाव के लिए ठूंठ (फसल अवशेष) हटा दें।

2. बीज बुवाई

बीज दर: देसी किस्में: 60-90 किग्रा/हेक्टेयर। काबुली किस्में: 100-125 किग्रा/हेक्टेयर।

दूरी: पंक्तियों के बीच 30 सेमी, पौधों के बीच 10 सेमी।

बुवाई का समय: वर्षा आधारित (बारानी): अक्टूबर (दूसरा पखवाड़ा); सिंचित: नवंबर (पहला पखवाड़ा)।

विधि: सीड ड्रिल या स्थानीय हल से कतार में बुवाई; गहरी बुवाई (>8 सेमी) से बचें।

3. पोषक तत्व प्रबंधन

आधारभूत अनुप्रयोग (बुवाई के समय): बारानी: 12.5 किग्रा नाइट्रोजन (N) + 25 किग्रा फॉस्फोरस (P_2O_5) + 12.5 किग्रा पोटैशियम (K_2O) + 10 किग्रा सल्फर (S)/हेक्टेयर। सिंचित: जिंक की कमी वाली मिट्टी में 25 किग्रा जिंक सल्फेट ($ZnSO_4$)/हेक्टेयर।

जैव उर्वरक: राइजोबियम + फॉस्फोबैक्टीरिया (प्रत्येकी 200 ग्राम/हेक्टेयर) से बीज उपचार।

सूक्ष्म पोषक तत्व: कमी वाली मिट्टी में बोरॉन (1-1.5 किग्रा/हेक्टेयर)।

4. सिंचाई

पानी की आवश्यकता: 250-400 मिमी/मौसम; हल्की सिंचाई (प्रत्येक 50-60 मिमी)।

क्रांतिक अवस्थाएँ: फूल आने से पहले (बुवाई के 25-30 दिन बाद - DAS) और फली विकास (बुवाई के 45-50 दिन बाद - DAS)।

विधियाँ: जलभराव से बचने के लिए कूंड (फरो) या स्प्रिंकलर सिंचाई।

5. खरपतवार प्रबंधन

अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशी: पेंडीमेथालिन (1 किग्रा/हेक्टेयर) या ऑक्सीफ्लोरफेन (0.25 किग्रा/हेक्टेयर)। हाथ से निराई: बुवाई के 45

दिन बाद (DAS) एक बार। एकीकृत पद्धतियाँ: सरसों/धनिया के साथ अंतर-फसल। फसल अवशेषों से मल्चिंग।

6. एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM)

मुख्य कीट: फली छेदक (हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा), कटवर्म, एफिड्स (माहू)।

रणनीतियाँ: सस्य क्रियाएँ (Cultural): गहरी जुताई, समकालिक बुवाई, गेंदा ट्रैप फसलें। जैविक: HaNPV (हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रोसिस वायरस) (250 LE/हेक्टेयर), बीटी स्प्रे, प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण। रासायनिक: यदि कीट आर्थिक क्षति स्तर (thresholds) से अधिक हो जाएं तो स्पिनोसैड (0.015%) या इमामेक्टिन बेंजोएट (0.002%)। चना (बंगाल ग्राम) को फली छेदक (हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा), कटवर्म, एफिड्स (माहू), और ब्रुचिड्स (भंडारण कीट/घुन) जैसे कीटों से खतरा होता है। एक समग्र IPM दृष्टिकोण पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बनाए रखते हुए उपज के नुकसान को कम करने के लिए निगरानी, सस्य, जैविक और लक्षित रासायनिक हस्तक्षेपों को जोड़ता है।

कीट निगरानी

त्वरित विचरण सर्वेक्षण (RRS): कीट-प्रवण क्षेत्रों में प्रारंभिक संक्रमण का पता लगाने के लिए आयोजित किए जाते हैं।

कृषि-पारिस्थितिकी तंत्र विश्लेषण (AESA): कीटों, प्राकृतिक शत्रुओं, मिट्टी के स्वास्थ्य और मौसम के लिए साप्ताहिक रूप से 20 पौधे/खेत की निगरानी करें। कीट:रक्षक (P:D) अनुपात की गणना करें (कार्रवाई के लिए 2:1 की सीमा)। अनुकूल अनुपात रासायनिक उपयोग को अनावश्यक बनाते हैं।

सस्य रणनीतियाँ

खेत की तैयारी: मिट्टी-जनित कीटों को उजागर करने और ठूंठ को नष्ट करने के लिए गर्मियों में गहरी जुताई। अंतर-फसल: प्राकृतिक शत्रुओं को आकर्षित करने के लिए सरसों, धनिया, या ज्वार रक्षक फसलों के रूप में। प्रतिरोधी किस्में: उकठा (विल्ट) प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करें (जैसे, JG 11, JG 130)। फसल चक्र: कीट चक्र को बाधित करने के लिए गैर-पोषक फसलों (जैसे, ज्वार, चावल) के साथ। ट्रैप फसलें: कीटों को भटकाने के लिए गेंदे की मेड़ें या सूरजमुखी की कतारें।

जैविक नियंत्रण

प्राकृतिक शत्रु: परजीवी (Parasitoids): टेलिनोमस प्रजाति (अंडा परजीवी), कैम्पोलेटिस क्लोरिडी (लार्वा परजीवी)। शिकारी (Predators): लेडीबर्ड बीटल (50 माहू/दिन), लेसविंग (400 माहू/जीवनचक्र), मकड़ियाँ। जैव कीटनाशक: फली छेदक के लिए HaNPV (250 LE/हेक्टेयर)। ब्यूवेरिया बेसियाना (कीट रोगजनक कवक)।

यांत्रिक और भौतिक विधियाँ

प्रकाश प्रपंच (लाइट ट्रैप): पतंगों की निगरानी और बड़े पैमाने पर पकड़ने के लिए 1 ट्रैप/एकड़ (शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक संचालित करें)।फेरोमोन ट्रैप: फली छेदक की निगरानी के लिए 5 ट्रैप/हेक्टेयर।पक्षी बसेरा (बर्ड पर्च): पक्षी शिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए 20/हेक्टेयर।

रासायनिक हस्तक्षेप

बीज उपचार: मिट्टी के कीटों के लिए इमिडाक्लोप्रिड (3 ग्राम/किग्रा) या थियामेथोक्साम (4 ग्राम/किग्रा)। लक्षित स्प्रे: यदि P:D अनुपात 2:1 से अधिक हो तो स्पिनोसैड (0.015%) या इमामेक्टिन बेंजोएट (0.002%)। वानस्पतिक के रूप में नीम का तेल (2-3%) या NSKE (नीम बीज गिरी अर्क) (5%)।मिट्टी उपचार: कटवर्म के लिए क्लोरपाइरीफोस 5D (25 किग्रा/हेक्टेयर)। मुख्य IPM सिद्धांत: प्राकृतिक शत्रु संरक्षण को प्राथमिकता दें, समकालिक बुवाई अपनाएं, और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम (broad-spectrum) कीटनाशकों से बचें। स्थायी कीट प्रबंधन के लिए नियमित खेत की निगरानी और AESA पर किसान प्रशिक्षण महत्वपूर्ण हैं।

7. कटाई और कटाई उपरांत प्रबंधन

कटाई: जब 80% फलियाँ पीली हो जाएँ; हाथ से या मशीन से गहाई (threshing) करें। सुखाना: भंडारण के लिए नमी को 10-12% तक कम करें। भंडारण: ब्रुचिड़ (घुन) के प्रकोप को रोकने के लिए हर्मेटिक बैग (हवा-रोधी थैले) का उपयोग करें या नीम के तेल से उपचारित करें। नुकसान कम करना: कटाई के दौरान बारिश से बचें; कृंतक-रोधी (चूहा-रोधी) भंडारण सुनिश्चित करें।

ચણા:કૃષિ પદ્ધતિઓની પત્રક

૧. કૃષિ-આબોહવાકીય જરૂરિયાતો અને જમીનની તૈયારી

આબોહવા: શિયાળુ પાક (આદર્શ તાપમાન ૧૫-૨૫°C); ફૂલ આવવાના સમયે હિમ લાગવાથી ઉપજને નુકસાન થાય છે.મધ્યમ વરસાદ (૬૦-૯૦ સેમી/વર્ષ); પાણી ભરાઈ રહેવાથી વૃદ્ધિને નુકસાન થાય છે.

જમીન: સારી નિતાર શક્તિવાળી ગોરાડુ/કાંપવાળી ચીકણી માટી (pH ૬-૮). તૈયારી: ઊંડી ખેડ કર્યા પછી જમીનમાં હવા ઉજાસ માટે કરબડી ફેરવવી. જમીનજન્ય રોગોને રોકવા માટે પાકના અવશેષો (જડિયા) દૂર કરવા.

૨. બીજ વાવણી

બીજનો દર: દેશી જાતો: ૬૦-૯૦ કિગ્રા/હેક્ટર. કાબુલી જાતો: ૧૦૦-૧૨૫ કિગ્રા/હેક્ટર. અંતર: બે હાર વચ્ચે ૩૦ સેમી, બે છોડ વચ્ચે ૧૦ સેમી. વાવણીનો સમય: બિન-પિયત (વરસાદ આધારિત): ઓક્ટોબર (બીજો પખવાડિયો). પિયત: નવેમ્બર (પ્રથમ પખવાડિયો). પદ્ધતિ: ઓરણી (સીડ ડ્રીલ) અથવા સ્થાનિક હળ દ્વારા લાઈનમાં વાવણી; વધુ ઊંડી (>૮ સેમી) વાવણી ટાળવી.

૩. પોષણ વ્યવસ્થાપન

પાયાનું ખાતર: બિન-પિયત: ૧૨.૫ કિગ્રા નાઇટ્રોજન (N) + ૨૫ કિગ્રા ફોસ્ફરસ (P_2O_5) + ૧૨.૫ કિગ્રા પોટાશ (K_2O) + ૧૦ કિગ્રા સલ્ફર (S)/હેક્ટર. પિયત: ઝીંકની ઉણપવાળી જમીનમાં ૨૫ કિગ્રા ઝીંક સલ્ફેટ ($ZnSO_4$)/હેક્ટર. જૈવિક ખાતરો: રાઈઝોબિયમ + ફોસ્ફોબેક્ટેરિયા (૨૦૦ ગ્રામ/હેક્ટર) દ્વારા બીજ માવજત. સૂક્ષ્મ પોષકતત્વો: બોરોનની ઉણપવાળી જમીનમાં બોરોન (૧-૧.૫ કિગ્રા/હેક્ટર).

૪. પિયત (સિંચાઈ)

પાણીની જરૂરિયાત: ૨૫૦-૪૦૦ મિમી/ઋતુ; હળવું પિયત (દરેક ૫૦-૬૦ મિમી). કટોકટીના તબક્કા: ફૂલ આવતા પહેલા (વાવણી પછી ૨૫-૩૦ દિવસે). શીંગોના વિકાસ સમયે (વાવણી પછી ૪૫-૫૦ દિવસે). પદ્ધતિઓ: પાણી ભરાઈ રહેતું ટાળવા માટે નીક દ્વારા અથવા ફુવારા પદ્ધતિથી પિયત આપવું.

૫. નીંદણ વ્યવસ્થાપન

પૂર્વ-ઉગમણ નીંદણનાશકો: પેન્ડીમિથાલિન (૧ કિગ્રા/હેક્ટર) અથવા ઓક્સીફ્લોરફેન (૦.૨૫ કિગ્રા/હેક્ટર).હાથ નિંદામણ: વાવણી પછી ૪૫ દિવસે એકવાર.સંકલિત પદ્ધતિઓ: રાઈ/ધાણા સાથે આંતરપાક. પાકના અવશેષોનું મલ્ચિંગ (આચ્છાદન).

૬. સંકલિત જીવાત વ્યવસ્થાપન (IPM)

મુખ્ય જીવાતો: શીંગો કોરી ખાનાર ઈયળ (હેલિકોવર્પા આર્મીગેરા), કાપનાર ઈયળ (કટવર્મ), મોલો (એફિડ્સ), ભમરા (લુચીડ્સ).

સર્વગ્રાહી IPM અભિગમ: નિરીક્ષણ, ખેતી પદ્ધતિઓ, જૈવિક નિયંત્રણ અને લક્ષિત રાસાયણિક ઉપાયોનું સંયોજન કરીને ઉપજનું નુકસાન ઘટાડવું અને પર્યાવરણીય સંતુલન જાળવવું. જીવાત નિરીક્ષણ: ઝડપી સર્વે (Rapid Roving Surveys - RRS): જીવાતગ્રસ્ત વિસ્તારોમાં પ્રારંભિક ઉપદ્રવ શોધવા માટે હાથ ધરવામાં આવે છે. કૃષિ-પર્યાવરણીય વિશ્લેષણ (Agro-Ecosystem Analysis - AESA): જીવાતો, ફુદરતી દુશ્મનો (મિત્ર કીટકો), જમીનનું સ્વાસ્થ્ય અને હવામાન માટે દર અઠવાડિયે ખેતરમાં ૨૦ છોડનું નિરીક્ષણ કરવું. જીવાત:રક્ષક (Pest:Defender - P:D) ગુણોત્તરની ગણતરી કરવી (કાર્યવાહી માટે ૨:૧ નો થ્રેશોલ્ડ). અનુકૂળ ગુણોત્તર રાસાયણિક ઉપયોગને નકારે છે.

ખેતી પદ્ધતિઓ: ખેતરની તૈયારી: જમીનમાં રહેલ જીવાતોને ખુલ્લી પાડવા અને પાકના અવશેષોનો નાશ કરવા ઉનાળામાં ઊંડી ખેડ કરવી. આંતરપાક: ફુદરતી દુશ્મનોને આકર્ષવા માટે રક્ષક પાક તરીકે રાઈ, ધાણા અથવા જુવાર. પ્રતિકારક જાતો: સુકારા સામે પ્રતિરોધક જાતોનો ઉપયોગ કરવો (દા.ત., JG 11, JG 130). પાક ફેરબદલી: જીવાત ચક્રને તોડવા માટે બિન-યજમાન પાકો (દા.ત., જુવાર, ચોખા) સાથે ફેરબદલી કરવી. પિંજર પાક: જીવાતોને અન્યત્ર વાળવા માટે ગલગોટાની વાડ અથવા સૂર્યમુખીની હાર. જૈવિક નિયંત્રણ: ફુદરતી દુશ્મનો: *પરજીવી:* ટેલેનોમસ પ્રજાતિ (ઈંડા પરજીવી), કેમ્પોલેટિસ ક્લોરિડી (ઈયળ પરજીવી). *પરભક્ષી:* લેડીબર્ડ ભમરો (દાળિયા) (૫૦ મોલો/દિવસ), લીલી પોપટી (ક્રાયસોપા) (૪૦૦ મોલો/જીવનચક્ર), કરોળિયા. જૈવિક જંતુનાશકો: શીંગો કોરી ખાનાર ઈયળ માટે HaNPV (૨૫૦ LE/હેક્ટર). બ્યુવેરિયા બાસિયાના (જંતુરોગકારક ફૂગ). યાંત્રિક અને ભૌતિક પદ્ધતિઓ: પ્રકાશ પિંજર: ફૂદાંના નિરીક્ષણ અને સામૂહિક પકડ માટે ૧ પિંજર/એકર (સાંજે ૬ થી ૧૦ વાગ્યા સુધી ચલાવો). ફેરોમોન ટ્રેપ: શીંગો કોરી ખાનાર ઈયળના નિરીક્ષણ માટે ૫ ટ્રેપ/હેક્ટર. પક્ષીઓ માટેના બેઠક: પક્ષી શિકારીઓને પ્રોત્સાહિત કરવા ૨૦/હેક્ટર. રાસાયણિક ઉપાયો: બીજ માવજત: જમીનની જીવાતો માટે ઈમિડાક્લોપ્રિડ (૩ ગ્રામ/કિગ્રા) અથવા થાયામેથોક્ઝામ (૪ ગ્રામ/કિગ્રા). લક્ષિત છંટકાવ: જો P:D ગુણોત્તર ૨:૧ થી વધી જાય તો સ્પિનોસાડ (૦.૦૧૫%) અથવા ઇમામેક્ટીન બેન્ઝોએટ (૦.૦૦૨%) નો છંટકાવ કરવો. વનસ્પતિ આધારિત તરીકે લીમડાનું તેલ (૨-૩%) અથવા લીંબોળીનો અર્ક (NSKE) (૫%). જમીનમાં સારવાર: કાપનાર ઈયળો માટે ક્લોરપાયરીફોસ ૫D (૨૫ કિગ્રા/હેક્ટર). મુખ્ય IPM સિદ્ધાંતો: ફુદરતી દુશ્મનોની જાળવણીને પ્રાધાન્ય આપવું, સમયસર એકસાથે વાવણી અપનાવવી, અને પર્યાવરણીય સંતુલન જાળવવા માટે બહોળા સ્પેક્ટ્રમવાળા જંતુનાશકો ટાળવા. ટકાઉ જીવાત વ્યવસ્થાપન માટે નિયમિત ખેતર નિરીક્ષણ અને AESA પર ખેડૂત તાલીમ નિર્ણાયક છે.

૭. કાપણી અને કાપણી પછીનું વ્યવસ્થાપન

કાપણી: જ્યારે ૮૦% શીંગો પીળી થઈ જાય; હાથથી અથવા મશીન દ્વારા ઝૂડણી કરવી. સૂકવણી: સંગ્રહ માટે ભેજનું પ્રમાણ ૧૦-૧૨% સુધી ઘટાડવું. સંગ્રહ:ભમરાના ઉપદ્રવને રોકવા માટે હવાચુસ્ત (હર્મેટિક) બેગનો ઉપયોગ કરવો અથવા લીમડાના તેલની માવજત આપવી. નુકસાન ઘટાડવું: કાપણી દરમિયાન વરસાદ ટાળવો; ઉંદર-પ્રૂફ સંગ્રહ સુનિશ્ચિત કરવો. મહત્વપૂર્ણ નોંધ: સ્થાનિક જમીન પરીક્ષણો અથવા આબોહવાકીય પરિસ્થિતિઓના આધારે ગોઠવણો જરૂરી હોઈ શકે છે.

ARINO
SEEDS